Krishi Kumbh
Www.KrishiKumbh.Com
कृषि कुंभ
E-ISSN: 2582-9769
कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका
खण्ड 04 भाग 01, (जुन, 2024)
पृष्ठ संख्या 39–40

शुष्क ऋतु में पशु प्रबन्धन

डॉ0 मयंक दुबे
बांदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय,
बांदा, उत्तर प्रदेश, भारत।
Email Id: –mayanksitu@gmail.com

हमारा देश कृषि प्रधान देश है। अधिकतर जनसंख्या ग्रामों में निवास करती है। कृषि के साथ-साथ पशुपालन परम्परागत व पेशेवर जीविका है। बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु में सूखा पड़ने के कारण जब मनुष्य अपनी अन्य आजीविका खो बैठता है तो पशुधन ही एक मात्र उनकी आजीविका का साधन बनता है। इस प्रकार किसान की आर्थिक आय की दृष्टि से पशुधन मेरूदण्ड का कार्य करता है। अतः शुष्क मौसम में इस परम्परागत एवं पेशेवर पशुपालन-व्यवसाय में पशु की देखभाल बहुत महत्वपूर्ण है। पशुओं से दूध, मांस व भूमि हेतु बहुमूल्य व सस्ती पौष्टिक खाद प्राप्त होती है। सिर्फ गाय के गोबर से ही अधिक उत्पादन कर, अधिक से अधिक धन अर्जित किया जा सकता है। दूध नहीं देने वाली गायों से भी प्राप्त गोबर से अच्छा खाद तैयार कर, बेचने से एक गाय से वर्ष में हजारों रूपयों की आमदनी हो सकती है। अतः शुष्क क्षेत्रों में भी पशुधन आजीविका की रीढ़ की हड्डी साबित हो सकती हैं।

हमारे देश में प्रति हजार व्यक्तियों की तुलना में पशुओं की संख्या ५८८ है। इन पशुओं को खिलाने के लिए देश में कम से कम १० प्रतिशत उपजाऊ भूमि में हरे चारे की आवश्यकता है, परन्तु अधिक जनसंख्या के कारण यह सम्भव नहीं हो पाता। साथ ही देश के सभी स्थानों पर अनुकूल वातावरण नहीं होने से तथा जमीन व सिंचाई के अभाव में अच्छी किस्म के पौष्टिक हरे चारे जैसे बरसीम, रिजका इत्यादि उगाया जाना सम्भव नहीं हो पाता है। सूखे के समय में सार्वजनिक चरागाह, गोचर, ग्राम सभा की जमीन में न्यूनतम उत्पादकता के कारण चारा उपलब्ध नहीं हो पाता है तथा पशुपालकों की आर्थिक स्थिति व पशुधन की उत्पादन क्षमता कम होने से अधिक मंहगा पशु आहार देना भी सम्भव नहीं होता। सूखे के समय में पौष्टिक आहार के अभाव के कारण पशु का स्वास्थ्य व रोग-निरोधन क्षमता अच्छी नहीं रहती है। अतः सूखे में पशुओं की देखभाल की आवश्यकता और बढ़ जाती है।

शुष्क ऋतु में जब विपरीत परिस्थितियाँ रहती है, उस समय वन सम्पदा का सूखा चारा, पुवाल, भूसा, बाजरा, कड़वी व अन्य कुछ घास इत्यादि भी कम मात्रा में उपलब्ध होते हैं, ये अपेक्षाकृत अन्य पौष्टिक चारे से कम कीमत पर मिल सकते हैं। ये चारे पौष्टिकता की दृष्टि से बहुत ही निम्न स्तर के चारे हैं, जो पशु के शारीरिक संरक्षण, बढ़ोत्तरी व उत्पादन की आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं करते हैं परन्तु सूखे के समय में पशुओं को उनके शारीरिक विकास, दूध उत्पादन तथा शरीर को स्वस्थ बनाये रखने के लिए सभी आवश्यक तत्व जैसे प्रोटीन, ऊर्जा (कार्बोहाइड्रेट एवं वसा) खनिज लवण एवं विटामिन आदि उचित मात्रा व सही अनुपात में उपलब्ध कराने का प्रयत्न भी करना चाहिए। अतः शुष्क ऋतु में निम्न श्रेणी के उपलब्ध कम कीमत पर मिलने वाले चारे की कुछ तकनीकी तौर-तरीके अपना कर अधिक पौष्टिक, सन्तुलित व रूचिकारक बनाकर पशुओं की आवश्यकता की पूर्ति में सहयोग दिया जा सकता हैं, जिसके लिए कुछ विधियाँ विकसित की गई हैं, ये निम्नलिखित हैं:-

(अ) चौपिंग या चारे को कुतरना :- इस विधि में भूसे को छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा जाता है जिसमें चारा ग्रहण करने की क्षमता और उसकी पचनीयता बढ़ जाती हैं। इसमें भूसे को खली के साथ पानी में फुला देते हैं, इससे ऊर्जा बढ़ जाती है तथा भूसे में उपस्थित आक्जेलेट (एक प्रकार का हानिकारक पदार्थ) का असर कम हो जाता है।

(ब) राशन का टिकिया में रूपान्तरणः- इस विधि के अन्तर्गत चारे को बारीक पीसने के बाद दाने के साथ

सानी बनाकर ठीक अनुपात में मिलाकर, मशीन द्वारा टिकिया बनाई जाती है, जिसे बाद में धूप में रख लिया जाता है। टिकिया के उपयोग से ऊर्जा, चारा ग्रहण करने की क्षमता और पोषक तत्वों की उपयोगिता बढ़ जाती हैं। सभी तत्व एक ही समय उपलब्ध हो जाते हैं। इस विधि में कम मेहनत व टिकिया के रख-रखाव में आसानी रहती हैं।

(स) रासायनिक विधि :- इस विधि में विभिन्न प्रकार के रसायनों से सूखे भूसे का उपचार किया जाता है। जैसे-

१. सोडियम हाइड्रहक्साइड (कास्टिक सोडा) से उपचार।
२. अमोनिया से उपचार।
३. यूरिया से उपचार।
४. यूरिया तथा शीरे से उपचार।

उपरोक्त विधियों में यूरिया तथा शीरे से उपचार की विधि अत्यन्त सरल, सस्ती व उपयोगी है। इसकी संक्षिप्त विधि निम्न प्रकार है-

१. यूरिया सस्ता व सरलता से उपलब्ध हो जाता है। यूरिया जुगाली करने वाले पशुओं की प्रोटीन की आवश्यकता को नाइट्रोजन के द्वारा कुछ हद तक पूरा करता है।
२. गन्ने से शक्कर बनाने के समय एक उप-उत्पाद के रूप में शीरा काफी मात्रा में मिल जाता है। शीरे को पशु-आहार में उपयोग कर, अधिक ऊर्जा वाला राषन तैयार किया जा सकता है एवं आहार का स्वाद भी अच्छा हो जाता हैं।

आवश्यक सामग्री - ८० किलो भूसा (सूखा चारा), १० किलो शीरा (गुड़), १ किलो यूरिया, ५०० ग्राम खनिज मिश्रण, ५०० ग्राम साधारण नमक, ५० ग्राम विटामिन मिश्रण।

निर्माण की विधि - एक बाल्टी में १० लीटर पानी लेकर उसमें एक किलो यूरिया को घोल लें। इसमें दस किलो शीरा मिलाकर अच्छी तरह मिलायें और इसी घोल में ५०० ग्राम नमक, ५०० ग्राम खनिज मिश्रण तथा करीब ५० ग्राम विटामिन ए भी मिला लेवें।

इस घोल का ८० किलो सूखे भूसे को फर्श पर फैला कर उस पर अच्छी तरह छिडकाव करें तथा अच्छी तरह मिला लें एवं इस मिश्रण को २४ घण्टे के लिये ढक रख दें। इस प्रकार उपचारित सूखा भूसा सुबह शाम खिलाने से पशुओं के पेट में यूरिया की निर्धारित मात्रा धीरे-धीरे नियमित रूप से पहुँचती है जिससे किसी प्रकार की हानि की सम्भावना नहीं रहती। शुरूआत में पशुओं को थोड़ा-थोड़ा उपचारित भूसा खिलाकर आदत डालें व धीरे-धीरे मात्रा बढ़ाते रहे। यूरिया घोल को आवश्यकतानुसार सूखे चारे में मिलाकर रोजाना खिलाया जाता है। ताजा पानी हर समय पशुओं को भरपूर मिलना चाहिए। कभी-कभी जब शीरा मिलाने में कठिनाई हो या उपलब्ध न हो तो ऐसी परिस्थितियों में भूसा, पुवाल, बाजरा व ज्वार की कड़वी को केवल यूरिया द्वारा ही उपचारित करके पशुओं को खिलाया जा सकता है।

इसकी विधि निम्न प्रकार है - चार किलो यूरिया को लगभग ६५ किलो पानी में अच्छी तरह घोलें। यूरिया घोल को सौ किलो सूखे चारे पर छिड़क कर मिला लें। यूरिया घोल के छिडकाव के पश्चात् घोल पड़े हुए चारे का एक ढेर बनाकर पहलीथीन की चादर से अच्छी तरह ढक कर चारों तरफ से दबा दें, ताकि हवा न लगे। एक महीने के बाद यूरिया उपचारित चारा पशु को खिलाने के पहले करीब एक घंटे खुली हवा में रखें।

कृपया ध्यान रखें कि अधिक मात्रा में यूरिया मिलाने से यह जहर का कार्य कर सकता है जिससे पषु के मुंह से अत्यधिक लार गिरती हैं तथा सांस लेने में परेशानी होती है, मांसपेशियां अकड जाती है एवं अंततः रक्त टिटेनी से पशु की मौत हो सकती हैं। अतः यूरिया की मात्रा एवं उपचारित चारे की खिलाई गई मात्रा का पूर्ण ध्यान रखा जाये। ऐसी अवस्था में छोटे पशुओं को आधा लीटर और बड़े पशुओं को चार लीटर सिरका, नाल द्वारा खिलायें तथा पेट से गैस निकालने का प्रयास करें। चार माह से कम उम्र के पशुओं को यूरिया मिश्रण या इससे उपचारित आहार न दें। शुष्क मौसम में हरे चारे की उपलब्धता हेतु उगायी गई चरी तथा घासों की वृद्धि कम हो जाती है तथा इसमें भ्ब्छ नामक जहर पैदा हो जाता है। जिसे खाने से पषु बीमार हो जाते हैं। अतः ऐसा चारा पशुओं को न खिलाया जाये।

बुन्देलखण्ड क्षेत्र में ग्रीष्म ऋतु में पशुपालकों को अपने पशुओं को स्वस्थ रखने तथा उनकी उत्पादकता को बनाये रखने में उपरोक्त तकनीकियाँ काफी हद तक मदद कर सकती है। पोषण प्रबन्धन शुष्क ऋतु में पशु प्रबन्धन का महत्वपूर्ण घटक है।